उपसर्ग (Prefix)

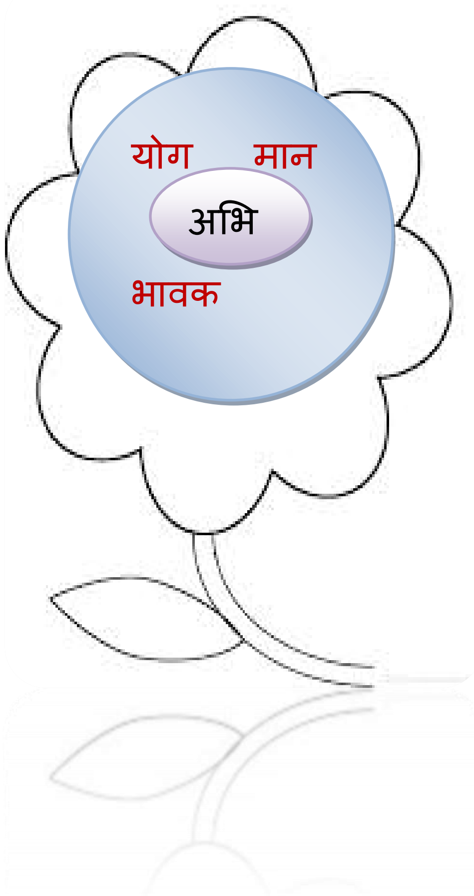

अभियोग, अभिमान, अभिभावक

उपसर्ग उन शब्दांशों को कहते हैं, जो किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता ला देते हैं।

जैसे- अनु : **अनु**चर, **अनु**ज, **अनु**करण, **अनु**नय, **अनु**रोध।

उपसर्गों को **चार** भागों में बाँटा जा सकता हैं-

क. संस्कृत के उपसर्ग

ख. हिंदी के उपसर्ग

ग. उर्दू के उपसर्ग

घ. उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय

संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द-रूप
अप	बुरा, हीन	अपकार, अपमान, अपयश
अनु	पीछे,समान	अनुरूप, अनुकरण, अनुज
अधि	ऊपर,प्रधानता	अधिकार, अध्यक्ष, अधिपति
अति	अधिक, ऊपर	अत्युत्तम, अत्यंत, अतिरिक्त
आ	तक से, लेकर, उलटा	आजन्म, आगमन, आकाश
अभि	सामने, अधिक पास	अभियोग, अभिमान, अभिभावक
अव	बुरा, नीचे	अवनति, अवगुण, अवशेष
उत्	ऊपर, श्रेष्ठ	उत्कंठा, उत्कर्ष, उत्पन्न
उप	निकट, गौण	उपकार, उपदेश, उपचार, उपाध्यक्ष
दुस्	बुरा	दुश्चरित्र, दुस्साहस, दुर्गम
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्जन, दुर्दशा, दुर्गम
परा	पीछे, उलटा	पराधीन, परामर्श, पराक्रम
परि	सब ओर	परिपूर्ण, परिजन, परिवर्तन
प्र	आगे, अधिक, उत्कृष्ट	प्रयत्न, प्रबल, प्रसिद्ध
नि	अभाव, विशेष	नियुक्त, निबंध, निमग्न
निर्	बिना	निर्वाह, निर्मल, निर्जन
निस्	बिना	निश्चल, निश्छल, निश्चित
प्रति	सामने, उलटा	प्रतिकूल, प्रत्येक, प्रत्यक्ष
वि	हीनता, विशेष	वियोग, विशेष, विधवा
सम्	पूर्ण, अच्छा	संचय, संगति, संस्कार

उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने वाले संस्कृत अव्यय

उपसर्ग	अर्थ	शब्द-रूप
चिर	बहुत देर	चिरायु, चिरकाल, चिरंतन
अंतर	भीतर	अंतरात्मा, अंतर्राष्ट्रीय, अंतर्जातीय
पुनः	फिर	पुनर्गमन, पुनर्जन्म, पुनर्मिलन
स	सहित	सजल, सकल, सहर्ष
अधः	नीचे	अधःपतन, अधोगति, अधोमुख
पुरा	पुराना	पुरातत्व, पुरातन
तिरस्	बुरा, हीन	तिरस्कार, तिरोभाव
सत्	श्रेष्ठ	सत्कार, सज्जन, सत्कार्य
अ	निषेध	अज्ञान, अभाव, अचेत
अन्	निषेध	अनागत, अनर्थ, अनादि
पुरस्	आगे	पुरस्कार, पुरस्कृत

हिंदी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द-रूप
अन	रहित	अनपढ़, अनबन, अनजान
अध	आधा	अधमरा, अधखिला, अधपका
अ	अभाव, निषेध	अजर, अछूत, अकाल
औ	रहित	औगुन, औतार, औघट
उन	कम	उनतीस, उनचास, उनसठ
चौ	चार	चौराहा, चौपाया, चौकोर
पर	दूसरा, बादका	परोपकार, परपुरुष, परलोक
भर	पूरा	भरपूर, भरपेट, भरसक
कु	बुराई	कुसंग, कुकर्म, कुमति
नि	अभाव	निडर, निहत्था, निकम्मा

उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द-रूप
बे	बिना	बेईमान, बेचारा, बेअक्ल
ला	रहित	लापरवाह, लाचार, लावारिस
सर	मुख्य	सरकार, सरदार, सरपंच
हम	साथ	हमदर्दी, हमराज, हमदम
कम	थोड़ा	कमबख्त, कमजोर, कमसिन
खुश	प्रसन्न, अच्छा	खुशबू, खुशदिल, खुशमिजाज
गैर	निषेध	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरकौम
दर	में	दरअसल, दरकार, दरमियान
ना	निषेध	नालायक, नापसंद, नामुमकिन
बा	अनुसार	बाकायदा, बाकायदा, बाइज्जत
बद	बुरा	बदनाम, बदमाश, बदचलन
हर	प्रति	हरदिन, हर, हरसाल

ध्यान दें

- शब्द के प्रारंभ में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता लाने वाले शब्दांश उपसर्ग कहलाते हैं।
- उपसर्गों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।
- हिन्दी भाषा में चार प्रकार के उपसर्ग हैं।
- उपसर्ग शब्दांश होते हैं,शब्द नहीं।

प्रत्यय (Suffix)

लिखनेवाला

पढ़नेवाला

फलवाला

प्रत्यय उन शब्दांशों को कहते हैं, जो किसी शब्द के अंत में लगकर उनके अर्थ को बदल देते हैं।

जैसे - वाला - पढ़ने**वाला**, लिखने**वाला**, फल**वाला**,

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

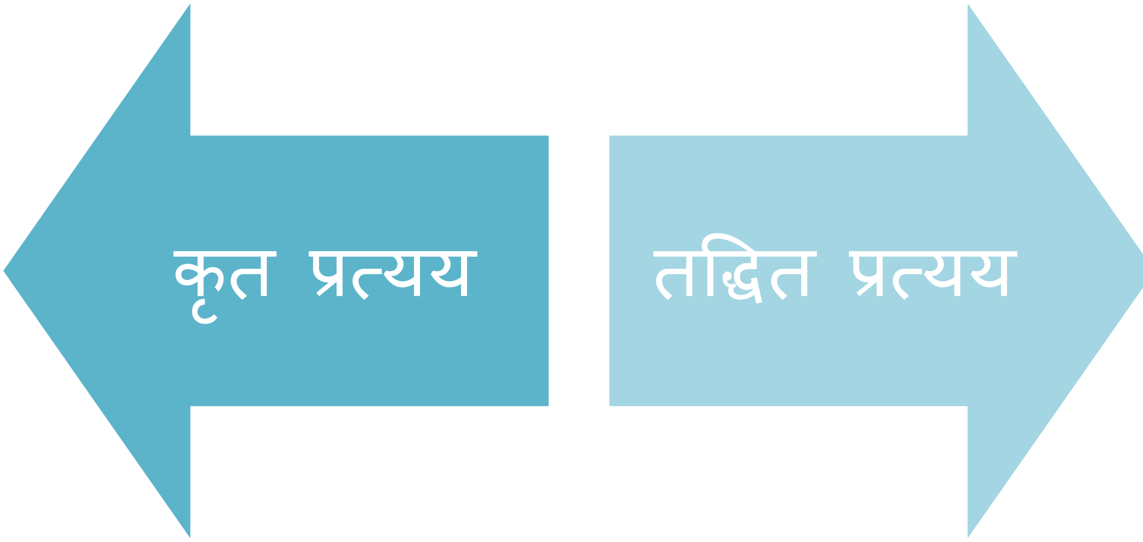

क. कर्तृवाचक कृदंत
ख. कर्मवाचक कृदंत
ग. करणवाचक कृदंत
घ. भाववाचक कृदंत
ड. क्रियावाचक कृदंत

क. कर्तृवाचक तद्धित
ख. भाववाचक तद्धित
ग. संबंधवाचक तद्धित
घ. ऊनता /लघुता वाचक तद्धित
ड़. गणनावाचक तद्धति
च. सादृश्यवाचक तद्धित
छ. गुणवाचक तद्धति
ज. स्थानवाचक तद्धति

कृत प्रत्यय

जो प्रत्यय क्रिया के धातु रुप के अंत में लगते हैं वे कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत प्रत्यय के योग से बने शब्दों को कृदंत कहते हैं।

जैसे - लिख़ + आवट = लिखावट, सूख + आ = सूखा आदि।

कृत प्रत्यय के भेद

क. कर्तृवाचक कृदंत - जिस कर्तृ प्रत्यय से कार्य करने वाले अर्थात् कर्ता का बोध हो, वह कर्तृवाचक कृदंत कहलाता है। जैसे-

प्रत्यय	शब्द-रूप
आऊ	बिकाऊ, टिकाऊ, चलाऊ
अक	धावक, सहायक, पालक
आलू	आलु, झगड़ालू, दयालु, कृपालु
रा	लुटेरा, सपेरा
ऐया	गवैया, रखैया, लुटैया
आड़ी	अनाड़ी, खिलाड़ी, अगाड़ी
इया	बढ़िया, घटिया
आक	तैराक
आकू	पढ़ाकू, लड़ाकू
एरा	लुटेरा
सार	मिलनसार
हार	पालनहार,मारनहार
वाला	चलनेवाला,लिखनेवाला

ख. कर्मवाचक कृदंत - वे शब्द जो प्रत्यय से बनकर किसी कर्म का ज्ञान कराते हैं, वे कर्मवाचक कृदंत कहलाते हैं। जैसे

प्रत्यय	शब्द-रूप
ना	सूँघना, गाना
नी	ओढ़नी, सुंघनी
औना	खिलौना, घिनौना
आवना	डरावना, लुभावना

ग. करणवाचक कृदंत- वे शब्द जो प्रत्यय से बनकर क्रिया के कारण (साधन) का ज्ञान कराते हैं,उसे करण कृत प्रत्यय कहते हैं। जैसे

प्रत्यय	शब्द-रूप
नी	धौंकनी करतनी, सुमिरनी
ऊ	झाड़ू
ई	रेती, फाँसी, भारी
आ	भटका, भूला, झूला
अन	बेलन, बंधन
आनी	मथानी,कहानी

घ. भाववाचक कृदंत - जिन प्रत्ययों से निर्मित शब्दों से भाव अथवा क्रिया के व्यापार का बोध होता है, उन्हें भाववाचक कृदंत कहते हैं जैसे आई, आन, आवा, आवट, आहट आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप
आवा	भुलावा,छलावा, दिखावा
अन	चलन, मनन, मिलन
आई	कमाई, चढ़ाई, लड़ाई
आवट	सजावट, बनावट, रुकावट
आहट	घबराहट,चिल्लाहट

ङ. क्रियावाचक कृदंत - वे शब्द जो क्रिया के होने के भाव को प्रकट करते हैं, उन्हें क्रियावाचक कृदंत कहते है। जैसे -

प्रत्यय	शब्द-रूप
आ	सूखा, भूला, बैठा
ना	दौड़ना, सोना
हुआ आता हुआ	पढ़ता हुआ
कर	जाकर, देखकर

तद्धित प्रत्यय

जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण के अंत में लगकर नए शब्दों की रचना कराते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

जैसे - पंजाब + ई = पंजाबी, सज + ईला = सजीला

तद्धित प्रत्यय के भेद

क. कर्तृवाचक तद्धित -जिससे किसी कार्य के कर्ता का बोध हो। जैसे -

प्रत्यय	शब्द-रूप
कार	पत्रकार, कलाकार, चित्रकार
आ	मछुआ, गेरुआ, ठलुआ
हारा	लकड़हारा, पनिहारा, मनिहार
गर	कारीगर, बाजीगर, जादूगर
इया	सुखिया, रसोइया, आढ़तिया
एरा	सपेरा, ठठेरा, चितेरा
आर	चमार, सुनार
ई	धोबी, तेली
उआ	मछुआ, ठलुआ
वाला	टोपीवाला, गाड़ीवाला
हर	मनिहार

ख. भाववाचक तद्धित जिन प्रत्ययों के योग से बने शब्द कर्ता के भाव का बोध कराते हैं, उन्हें भाववाचक तद्धित कहते हैं ।

प्रत्यय	शब्द-रूप
ई	गरमी, सरदी, गरीबी
इमा	लालिमा, महिमा, अरुणिमा
आई	भलाई, बुराई, ढिठाई
आ	बुलावा, सर्राफा

पा	बुढ़ापा, मोटापा
पन	बचपन, लड़कपन, बालपन
आपा	मोटापा, बुढ़ापा
आयत	बहुतायत
त्व	लघुत्व, गुरुत्व
आस	मिठास, खटास

ग. सम्बन्ध तद्धित - जिन प्रत्ययों के योग से बने शब्द संबंध का बोध करते हैं, उन्हें संबंध वाचक कहते हैं। जैसे -

प्रत्यय	शब्द-रूप
इक	नैतिक, धार्मिक, आर्थिक
एरा	ममेरा, चचेरा, फुफेरा
ई	पंजाबी, गुजराती, लुधियानवी
आल	ससुराल
हाल	ननिहाल
जा	भतीजा, भांजा
अ	पांडव, कौरव, यादव, मानव
इ	दशरथि (दशरथ से संबंधित)

घ. ऊनता /लघुता वाचक तद्धित - जिन प्रत्ययों से बने शब्द लघुता (छोटा होने का भाव) का बोध करते हैं , उन्हें लघुता वाचक तद्धित कहते हैं।

प्रत्यय	शब्द-रूप
ई	पहाड़ी, टोकनी, ढोलकी
री	कोठरी, छतरी, बाँसुरी
इया	लुटिया, डिबिया, खटिया
टी, टा	लँगोटी, कछौटी, कलूटा
ड़ी, ड़ा	पगड़ी, टुकड़ी, बछड़ा

ङ. गणनावाचक तद्धित - जिन प्रत्यय के योग से बने शब्द संख्या के क्रम का बोध कराते हैं, उन्हें गणनावाचक तद्धित कहते हैं।

प्रत्यय	शब्द-रूप
रा	दूसरा, तीसरा
ला	पहला
हरा	इकहरा, दुहरा, तिहरा
था	चौथा
वाँ	पाँचवा, सातवाँ, ग्यारहवाँ

च. सादृश्यवाचक तद्धित - जो प्रत्यय समानता का ज्ञान कराते हैं। जैसे -

प्रत्यय	शब्द-रूप
हरा	सुनहरा, रुपहरा
सा	पीला-सा, नीला-सा, काला-सा
सी	अच्छी-सी, सुंदर-सी

छ. गुणवाचक तद्धित - जिस प्रत्यय से किसी गुण का बोध हो। जैसे-

प्रत्यय	शब्द-रूप
ईला	रंगीला, सजीला
ई	धनी, लोभी, क्रोधी
आ	भूखा, प्यासा, ठंडा, मीठा
वान	गुणवान, रूपवान

ज. स्थानवाचक तद्धित - जिस प्रत्यय से स्थान का बोध हो। जैसे-

प्रत्यय	शब्द-रूप
वाला	दिल्लीवाला
ई	पंजाबी, बंगाली, गुजराती
इया	कलकतिया, जबलपुरिया

कृत प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय में अंतर

कृत प्रत्यय	तद्धित प्रत्यय
जो प्रत्यय क्रिया के धातु रुप के अंत में लगते हैं, वे कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत प्रत्यय के योग से बने शब्दों को कृदंत कहते हैं।	जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण के अंत में लगकर नए शब्दों की रचना कराते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।
उदाहरण - लिख़ + आवट = लिखावट, सूख + आ = सूखा आदि।	उदाहरण - पंजाब + ई = पंजाबी, सज + ईला = सजीला